पाठ - साखी

- कबीर

प्रश्न - 1, 2 अंक

(1) कवि ने कैसी वाणी बोलने की प्रेरणा दी है? और उसका दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उ० - कबीर मधुर वाणी बोलने की प्रेरणा दी है। मधुर वाणी बोलने से सुनने वाले को सुख का अनुभव होता है, वह बोलने वाले के प्रति आकर्षित होता है। इससे आपसी प्रेम भी बढ़ता है।

(2) 'तन की शीतलता व दूसरों को सुख' कैसे प्राप्त होता है?

उ० - 'तन की शीतलता' अर्थात मीठी वाणी बोलने से जब सुनने वाला प्रसन्न होता है तो मन को शांति मिलती है और शरीर प्रसन्न हो जाता है। 'दूसरों को सुख' अर्थात जब दूसरों के साथ प्रेमपूर्वक बात की जाती है, तो उन्हें आनंद मिलता है, जिससे उन्हें सुख का अनुभव होता है।

(3) मृग क्या ढूंढता है और क्यों?

उ० - कस्तूरी, एक सुगंधित पदार्थ होता है। वह मृग की नाभि में विद्यमान होता है। फिर भी मृग कस्तूरी को दूर जंगलों तक भाग-भाग कर ढूंढता-फिरता है।

(4) राम और कस्तूरी में क्या समानता है?

उ० - जिसप्रकार मृग की नाभि में सुगंधित पदार्थ होता है लेकिन वह अज्ञानता वश उस बाहर ही खोजता फिरता है, वैसे ही राम भी मनुष्य के भीतर (हृदय) में निवास करते हैं परंतु मनुष्य अज्ञानता वश उसे मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे व अन्य धार्मिक स्थलों पर खोजता है। मन के भीतर उसका स्मरण नहीं करता है।

(8) कवि को ईश्वर की प्राप्ति कब संभव हुई?
उ० जब तक कवि के मन में अहंकार था तब तक उसे ईश्वर की प्राप्ति नहीं हुई। जब मन में ज्ञान का दीपक जलाया तो अज्ञानता रूपी अंधकार व अहंकार समाप्त हो गया है, कवि को ईश्वर की प्राप्ति हुई।

(6) 'सब अँधियारा मिटि गया' - ऐसा कवि ने क्यों कहा?
उ० जब तक व्यक्ति के मन में अहंकार होता है तब तक ईश्वर प्राप्ति संभव नहीं है क्योंकि अहंकार और ईश्वर साथ-साथ नहीं रहते। जब व्यक्ति अपने अहंकार का त्याग करता है तब उसके अंदर ज्ञान का दीपक जल उठता है। मन में फैला अज्ञानता का अँधियारा समाप्त हो जाता है और उसे परमात्मा की अनुभूति होने लगती है।

(7) कबीर के अनुसार संसार में लोग किसको सुखी मानते हैं?
उ० - जो लोग मस्ती से खाते-पीते हैं और सोते हैं अर्थात जो लोग भोग-विलास का जीवन जीते हैं, सुख-सुविधाओं से भरा हुआ जीवन व्यतीत करते हैं और प्रभु का चिंतन नहीं करते हैं, कबीर के अनुसार वे इस संसार में सुखी हैं।

(8) कबीर के जागने और रोने का क्या आशय है?
उ० - कबीर के जागने का आशय यह है - प्रभु के प्रति सचेत होना, उसका चिंतन करना। उसकी भक्ति में लीन रहना व उसे पाने के लिए साधना करना। उन्हें हर क्षण वियोग की पीड़ा का अनुभव होता था

(9) विरह को कबीर ने किस रूप में प्रस्तुत किया है? और, यह कहाँ निवास करता है?
उ० - कवि ने विरह को साँप के रूप में प्रस्तुत किया है वह मनुष्य के शरीर में बसता है। जिसके भी शरीर में यह विरह रूपी साँप बसता है, उस पर तंत्र-मंत्र, पूजा-पाठ, धार्मिक क्रियाओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(10) 'राम बियोगी' की दशा कैसी होती है?
उ० - 'राम बियोगी' प्राणी जी नहीं पाता। यदि वह जीता है तो उसकी स्थिति पागलों की भाँति होती है। उसे सांसारिक मोहमाया से कुछ लेना-देना नहीं होता

(11) कवि ने निंदक को अपने पास रखने का परामर्श क्यों दिया है?
उ० कवि के अनुसार निंदक को अपने पास रखना चाहिए क्योंकि निंदक अपनी निंदा रूपी वचनों से हमारे दोषों को, कमियों को सुधारने का मौका देता है वह हमारे दोष न निकाल सके इसलिए हम सतर्क होकर कार्य करते हैं। धीरे-धीरे हमारी सारी कमियाँ दूर होने लगती हैं।

(12) निंदक कहाँ स्थान देना चाहिए?
उ० - कबीर के अनुसार निंदक को आँगन में कुटिया बनाकर सदा अपने साथ रखना चाहिए ताकि बिना साबुन-पानी के स्वभाव को स्वच्छ बना दें अर्थात निंदक की निंदा भरी बातें सुनकर हमें आत्मसुधार का मौका मिले।

(13) 'पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ' शब्दों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए?
उ० - कवि कहता है कि धार्मिक ग्रंथ पढ़-पढ़कर संसार नष्ट होता चला जा रहा है। युग बीतते चले जा रहे हैं, लेकिन

सच्चे अर्थों के पंडित या विद्वान कोई नहीं बन पाया है अर्थात लोग ईश्वर ज्ञान को प्राप्त नहीं कर पाते। कवि का मानना है कि ईश्वर कभी मोटी-मोटी पुस्तकें पढ़ने से नहीं मिलता, उसे तो अपने अनुभव व चिंतन से प्राप्त किया जा सकता है।

(14) 'एकै आखिर पीव का' का आशय स्पष्ट करें।

उ०- एकै आखिर पीव का' शब्दों का प्रयोग ईश्वर के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए प्रयोग किया गया है। कबीर के अनुसार पीव अर्थात प्रियतम। यदि हम उस निराकार ब्रह्म के नाम का रटन करें तो ईश्वर को स्वयं ही पा सकते हैं।

(15) 'मुराड़ा' किसका प्रतीक है? कबीर ने मुराड़े से अपना घर क्यों जला डाला?

उ०- मुराड़ा जलती हुई मशाल को कहा गया है। जो ज्ञान और विवेक का प्रतीक है। कबीर ने मुराड़े से अपना घर जला डाला क्योंकि ईश्वर प्राप्ति हेतु वे सांसारिक विषय वासनाओं को त्यागना चाहते थे। यहाँ लोभ, माया, मोह, घृणा को जलाने की बात कही गई है।

(16) कबीर किस-किसका घर जलाना चाहते थे और क्यों?

उ० - कबीर उस-उसका घर जलाना चाहते थे जो ईश्वरीय ज्ञान को प्राप्त करने हेतु उनके साथ चलना चाहते हैं क्योंकि भक्ति का मार्ग घर को जलाकर अर्थात सांसारिक विषय-वासनाओं- काम क्रोध, लोभ, मोह, घृणा आदि को त्यागकर ही प्राप्त किया जा सकता है।

(17) ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते?

उ० - ईश्वर संसार के कण-कण में व्याप्त है परंतु हम उसे देख नहीं पाते, क्योंकि हमारा आत्मिक मन सांसारिक विषय-वासनाओं, अज्ञानता, अहंकार और अविश्वास से घिरा रहता है। अज्ञान के कारण हम ईश्वर से साक्षात्कार नहीं कर पाते। जिस प्रकार कस्तूरी नामक सुगंधित पदार्थ हिरण की नाभि में विद्यमान होता है, लेकिन वह उसे जंगल में इधर-उधर ढूंढता रहता है, उसी प्रकार ईश्वर हमारे हृदय में निवास करते हैं परंतु हम उन्हें अज्ञानता के कारण मंदिरों, मस्जिदों, गिरिजाघरों व गुरुद्वारों में व्यर्थ में ही खोजते फिरते हैं। कबीर के मतानुसार कण-कण में छिपे परमात्मा को पाने के लिए ज्ञान का होना अत्यंत आवश्यक है।

दीर्घ - उत्तर अंक -

(18) कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता बताइए।

उ० - कबीर जी द्वारा रचित इन साखियों की भाषा सधुक्कड़ी है। इसमें अवधी, ब्रज, खड़ीबोली, पूर्वी हिंदी, तथा पंजाबी के शब्दों का सुंदर प्रयोग हुआ है। कबीर की भाषा में देशज शब्दों का भी प्रयोग मिलता है। कबीर ने अपनी बात कहने के लिए साखी को अपनाया है। यह वस्तुत: दोहा छंद है। इनमें अत्यंत सामान्य भाषा में लोक व्यवहार की शिक्षा दी गई है। इनमें मुक्तक शैली का प्रयोग हुआ है तथा गीति तत्व के सभी गुण विद्यमान हैं। भाषा सहज तथा मधुर है। भाषा में अनुप्रास, रूपक, पुनरुक्तिप्रकाश, उदाहरण व दृष्टांत अलंकार प्रयुक्त हैं। अपनी सामर्थ्यशाली भाषा के कारण कबीर जगत प्रसिद्ध हैं तथा भाषा के डिक्टेटर कहे जाते हैं।

(9) कबीर की साखियों में कौन-कौन से जीवन-मूल्य उभरते हैं।
उ०- कबीर की साखियों में निम्नलिखित जीवन मूल्य उभरते हैं-
- हमें हमेशा मधुर वाणी बोलनी चाहिए। इसे वक्ता तथा श्रोता दोनों को लाभ होता है।
- हमें अहंकार का त्याग करना चाहिए।
- ईश्वर-प्राप्ति के लिए ज्ञान का होना आवश्यक है।
- निंदक को अपने घर में कुटिया बनाकर पास रखने के लिए कहा है।

20- कबीर द्वारा रचित साखी का प्रतिपाद्य लिखिए।
उ०- कबीर द्वारा रचित 'साखी' रचना नीति पर आधारित है। प्रस्तुत साखियाँ उपदेशात्मक हैं। कबीर का कहना है कि मनुष्य को हमेशा मधुर वाणी बोलना चाहिए जिससे वह स्वयं और दूसरे, दोनों प्रसन्न हों। कबीर का मानना है कि ईश्वर सर्वव्यापी है। जब मनुष्य ज्ञान रूपी दीपक को अपने हृदय में जलाए तो अज्ञानता रूप अंधकार को मिटाकर उस ईश्वर को प्राप्त कर सकता है। यह भी कहा गया है कि ईश्वर को प्राप्त करने के लिए अपने मन के अहंकार को भी समाप्त करना पड़ता है। इन साखियों में कबीर का दुख उभरकर सामने आता है। संसार में कुछ लोग ऐसे हैं जो खाते पीते हैं और सोते हैं अर्थात सुख-सुविधाओं से भरा जीवन व्यतीत करते हैं। उन्हें ईश्वरीय ज्ञान से कुछ लेना-देना नहीं। दूसरी ओर वे भी हैं जो सदा जाग्रत रहते हैं। प्रभु के वियोग में तड़पते हैं। निंदक को कबीर ने स्वभाव सुधारक के रूप में प्रस्तुत किया है और कहा है, यदि हम अपना स्वभाव सुधारना चाहते हैं तो सदा निंदक को पास

रखें ताकि वह हमारी त्रुटियाँ बताता रहे।
इन्हीं साखियों में यह भी बताया गया है कि बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़ने से ईश्वर नहीं मिलता। प्रेम से केवल उसका नाम लेने पर उसकी प्राप्ति होती है।
अंत में कबीर यह कहकर सचेत करना चाहते हैं कि यदि सांसारिक विषय वासनाओं को त्याग दें तो ईश्वर प्राप्ति संभव है।